इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

BPCC-101

मनोविज्ञान : एक परिचय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. विमला वीराराघवन
पूर्व एमेरिटस प्रो. मनोविज्ञान
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. करुणा निधी
विभाग प्रमुख, मनोविज्ञान विभाग
मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई

डॉ. एस., पी. के. जेना
एसोसिएट प्रोफेसर
मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. सुहास शेट गोवेकर
प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. स्वाति पात्रा
प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. मोनिका मिश्रा
सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. स्मिता गुप्ता
सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आशिमा नेहरा
तंत्रिका मनोविज्ञान, एम्स दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. स्मिता गुप्ता, मनोविज्ञान
एसओएस

पाठ्यक्रम निर्माण दल

खंड	खंड का नाम	इकाई लेखक	अनुवादक	पुनर्रीक्षण	संपादक
खंड 1	**मनोविज्ञान का परिचय**				
इकाई 1	मनोविज्ञान की उत्पत्तिः	प्रो. अमूल्य खुराना मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, IIT दिल्ली (BPC-001, ब्लॉक से अनुकूलित)	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 2	मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और क्षेत्र	प्रो. अमूल्य खुराना मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, IIT दिल्ली (BPC-001, ब्लॉक से अनुकूलित)	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
खंड 2	**प्रत्यक्षण**				
इकाई 3	प्रत्यक्षणः अर्थ, नियम प्रत्यक्षण आत्मक स्थिरता और प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक	डॉ आरती सिंह इग्नू	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 4	प्रत्यक्षणः प्रकार एवं त्रुटियाँ	डॉ आरती सिंह इग्नू	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
खंड 3	**चिंतन और भाषा**				
इकाई 5	चिंतन और भाषा	डॉ आरती सिंह इग्नू	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
खंड 4	**अधिगम और स्मृति**				
इकाई 6	अधिगम	डॉ आरती सिंह इग्नू	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 7	स्मृति	डॉ आरती सिंह इग्नू	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
खंड 5	**अभिप्रेरणा और संवेग**				
इकाई 8	अभिप्रेरणा	डॉ सुहास शेटगोवेकर इग्नू	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 9	संवेग	डॉ सुहास शेटगोवेकर इग्नू	सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद	डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद	डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली
बीपीसीसी–101 में प्रैक्टिकल					

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. स्मिता गुप्ता
सह-आचार्य
मनोविज्ञान विभाग विद्यापीठ
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

प्रमुख संपादक

डॉ. स्मिता गुप्ता
सह-आचार्य
मनोविज्ञान विभाग विद्यापीठ
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री राजीव गिरधर
असिस्टेंट रजिस्ट्रार (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री हेमन्त परीदा
असिस्टेंट रजिस्ट्रार (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुरेश कुमार
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

फरवरी, 2020

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साध न द्वारा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली-110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://www.ignou.ac.in देखें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर्स, सी-206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रित :

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय-वस्तु

		पृष्ठ सं.
खंड 1	**मनोविज्ञान का परिचय**	**7**
इकाई 1	मनोविज्ञान की उत्पत्ति	9
इकाई 2	मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और क्षेत्र	21
खंड 2	**प्रत्यक्षण**	**35**
इकाई 3	प्रत्यक्षात्मक स्थिरता और प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक	37
इकाई 4	प्रत्यक्षण : प्रकार एवं त्रुटियाँ	55
खंड 3	**चिंतन और भाषा**	71
इकाई 5	चिंतन और भाषा	73
खंड 4	**अधिगम और स्मृति**	**91**
इकाई 6	अधिगम	93
इकाई 7	स्मृति	113
खंड 5	**अभिप्रेरणा और संवेग**	**129**
इकाई 8	अभिप्रेरणा	131
इकाई 9	संवेग	144
बीपीसीसी–101 में प्रैक्टिकल		**163**

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

पाठ्यक्रम परिचय

मनोविज्ञान : एक परिचय नामक पाठ्यक्रम बी.ए. आनर्स के पहले सेमेस्टर का भाग है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा आपको मनोविज्ञान की संकल्पना और उसका अर्थ समझाना है। यह पाठ्यक्रम मानव के व्यवहार, उनकी संज्ञानात्मक प्रक्रिया, जैविक प्रक्रिया एवं उनके स्नेहपूर्ण प्रक्रियाओं का भी उल्लेख करता है जिनके चलते सभी मनुष्य एक तरह का व्यवहार नहीं दिखाता है।

इस पाठ्यक्रम का पहले खण्ड 'मनोविज्ञान का परिचय' है जिसमें इकाईयों द्वारा मनोविज्ञान कि उत्पत्ति और उसका भारत के साथ साथ पूरे विश्व में एक स्वतंत्र विभाग की तरह उसके उद्भव को भी दर्शाता है। इस पाठ्यक्रम का दूसरा खण्ड प्रत्यक्षण से जुड़े कारक, नियम, स्थिरता एवं प्रत्येक्षण की त्रृटियाँ को समझाता है।

इस पाठ्यक्रम का तीसरा खण्ड चिंतन और भाषा है जो कि चिंतन और रचनात्मकता को दर्शाता है। पाठ्यक्रम के चौथे खण्ड में अधिगम और स्मृति की परिभाषा प्रक्रिया, सिद्धांत तथा उनके चरणों के बारे में उल्लेख करता है। पाठ्यक्रम का अंतिम खण्ड अभिप्रेरणा और संवेग है जिसकी इकाइयों में आपको अभिप्रेरणा तथा संवेग की संकल्पना एवं सिद्धांतों को समझाया गया है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खण्ड 3
चिंतन और भाषा

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खण्ड 3 चिंतन और भाषा

परिचय

इस ब्लॉक में एकल इकाई शामिल है, जिसमें दो अलग–अलग प्रक्रियाओं– चिंतन और भाषा पर चर्चा की गई है सोचना एक उच्च मानसिक प्रक्रिया है हम चिंतन की प्रक्रिया में मानसिक छवियों, अवधारणाओं और प्रस्तावों का उपयोग करते हैं रचनात्मकता एक प्रकार की चिंतन है जिसमें मूल और नवीन विचारों का निर्माण शामिल है अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि लोग, जो अलग सोच रखते हैं, वे अधिक रचनात्मक होते हैं रचनात्मक चिंतन की प्रक्रिया में चार चरण शामिल हैंः तैयारी, ऊष्मायन, अंतर्दृष्टि और सत्यापन ये इकाई समस्या–समाधान व्यवहार की अवधारणा को भी समझाने की कोशिश करता है तीसरे ब्लॉक की वर्तमान इकाई में समस्या–समाधान के चरणों के साथ–साथ अवरोधों पर भी चर्चा की जाएगी एक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया जिसमें चिंतन एक विशेष भूमिका निभाता है वो हैः निर्णय लेना निर्णय लेने के चरणों और निर्णय लेने में त्रुटियों में पर इस इकाई में चर्चा की जाएगी इसके बाद, चर्चा का केंद्र भाषा, इसकी प्रकृति और घटक पर होगा, और फिर भाषा के विकास पर चर्चा की जाएगी आखिर में, ये इकाई भाषा और सोचा के सम्बंध की व्याख्या व्हॉर्फियन सिद्धांत के प्रकाश में की जाएगी।

इकाई 5 चिंतन और भाषा*

इकाई की रूपरेखा

5.0 परिचय

5.1 उद्देश्य

5.2 चिंतनः अवधारणा और प्रकार

5.3 चिंतन की प्रक्रियाः मानसिक छवि, अवधारणा और प्रस्ताव

- 5.3.1 अपने दिमाग में चित्रः मानसिक छवि
- 5.3.2 संकल्पना
- 5.3.3 प्रस्ताव

5.4 रचनात्मकता की संकल्पना

- 5.4.1 रचनात्मक चिंतन के चरण

5.5 समस्या का समाधानः एक अवधारणा

- 5.5.1 समस्या हल करने में बाधाएं

5.6 निर्णय लेनाः विकल्पों में से चुनना

- 5.6.1 निर्णय लेने की प्रक्रिया
- 5.6.2 निर्णय लेने में संज्ञानात्मक त्रुटियां
  - 5.6.2.1 स्वतः शोध/अनुमान
  - 5.6.2.2 पूर्वाग्रहों

5.7 संकल्पना, प्रकृति और भाषा का दायरा

- 5.7.1 भाषा का विकास
- 5.7.2 शिशुओं में भाषा
  - 5.7.2.1 बच्चों में भाषा
  - 5.7.2.2 भाषा और विचार के बीच संबंध

5.8 चलो योग करो

5.9 इकाई अंत प्रश्न

5.10 शब्दावली

5.11 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

5.12 संदर्भ और सुझाव रीडिंग

5.0 परिचय

द ट्रेजेडी ऑफ टाइटैनिकः सिंकिंग ऑफ द अनसिंकेबल शिप

"टाइटैनिक अकल्पनीय है", हर कोई इसके निर्माता द्वारा इस दावे पर विश्वास करता था 882.5 फीट लंबाई, 92.5 फीट चौड़ाई और 175 फीट ऊंचाई के साथ, टाइटैनिक को अपने समय का सबसे बड़ा जहाज माना जाता था जब 11 अप्रैल, 1912 को अपनी पहली यात्रा के लिए क्वीन्सटाउन, आयरलैंड छोड़ दिया, 2200 से अधिक यात्रियों और चालक दल के सदस्यों के साथ, सभी ने इसे उस समय का सबसे बड़ा, शक्तिशाली, तकनीकी रूप से उन्नत और अविनाशी जहाज माना

*डॉ. आरती सिंह, इग्नू, नई दिल्ली

चित्र 5.1: टाइटैनिक का एक दुर्लभ पोस्टर विज्ञापन
https//www.wonderopolis-org से लिया गया

सभी दावों के बावजूद, 14 अप्रैल, 1912 को, टाइटैनिक दो टुकड़ों में टूट गया और एक आइसबर्ग से टकराने के बाद उत्तरी अटलांटिक महासागर में डूब गया दावा किए गए "कभी भी ना डूबने वाले" अकल्पनीय टाइटैनिक का रहस्य, हमेशा से कई लोगों के लिए दिलचस्पी का विषय रहा है टाइटैनिक के डूबने का क्या कारण था? कई सिद्धांतों में से, एक के अनुसार, एक कारण टाइटैनिक के कप्तान, एडवर्ड स्मिथ के अपने जहाज की ताकत और नौकायन जहाजों के क्षेत्र में उनकी अपनी विशेषज्ञता का 'अति आत्मविश्वास' था इतिहासकारों के अनुसार, यह अति आत्मविश्वास कप्तान स्मिथ द्वारा महत्वपूर्ण समय में गलत निर्णय लेने की ओर ले जाता है।

आपको क्या लगता है, यहाँ इस घटना की चर्चा क्यों की गई है? क्योंकि यह हमारी संज्ञानात्मक क्षमताओं की विडंबना को उजागर करता है एक तरफ, हमारी संज्ञानात्मक क्षमताओं में व्यापक क्षमताएं हैं दूसरी ओर, यह हमारे प्रभावी निर्णय लेने में बाधा डालता है संज्ञानात्मक त्रुटि के कारण गलत निर्णय की एक ऐसी घटना को उजागर करने के लिए टाइटैनिक के मामले पर चर्चा की गई है निर्णय लेना एक उच्च मानसिक प्रक्रिया है जिसमें चिंतन और भाषा जैसी अन्य संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं होती हैं यह इकाई रचनात्मक सोच, समस्या को सुलझाने और निर्णय लेने की प्रक्रिया के बाद चिंतन पर चर्चा के साथ शुरू होती है फिर, हम भाषा के विषय को समझने के लिए आगे बढ़ेंगे, और अंत में, हम चर्चा करेंगे कि भाषा और चिंतन एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं

5.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न कार्य कर सकेंगे:

- चिंतन की अवधारणा और प्रकार की समझ
- चिंतन में शामिल विभिन्न प्रक्रियाओं मानसिक छवि, अवधारणाओं, और प्रस्तावों की समझ
- रचनात्मक विचारों की चरणबद्ध प्रक्रिया
- समस्या–समाधान की प्रक्रिया की गहराई से समझ और प्रभावी समस्या–समाधान व्यवहार में शामिल विभिन्न अवरोधों पर चर्चा

- निर्णय लेने की प्रकृति और उसकी प्रक्रिया की समझ
- निर्णय लेने में विभिन्न प्रकार की संज्ञानात्मक त्रुटियां
- भाषा की अवधारणा और प्रकृति पर चर्चा
- भाषा के विकास की प्रक्रिया की समझ
- भाषा और विचार के बीच के संबंध पर बहस

5.2 चिंतनः अवधारणा और प्रकार

सोचना एक उच्च मानसिक प्रक्रिया है साहित्य में इसे मुख्य रूप से दो तरह से परिभाषित किया गया हैः 1) पहली परिभाषा समस्या को हल करने वाली गतिविधि के रूप में सोचती है जबकि 2) दूसरी इसे बाहरी दुनिया के आंतरिक प्रतिनिधित्व के एक तंत्र के रूप में मानती है गैरेट (1968) के अनुसार, "चिंतन एक व्यवहार है जो अक्सर अंतर्निहित और छिपा हुआ होता है और जिसमें प्रतीकों (छवियों, विचारों और अवधारणाओं) को नियोजित किया जाता है" गिल्मर (1970) ने चिंतन को "समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया जिसमें हम प्रत्यक्ष गतिविधि के स्थान पर विचारों या प्रतीकों का उपयोग करते हैं" परिभाषित किया है इस प्रकार, चिंतन लक्ष्य–निर्देशित व्यवहार है। यह केवल कुछ संदर्भ में होता है और यादृच्छिक रूप से नहीं होता है एक पोषाक को चुनने से लेकर गणितीय समस्या को हल करने तक, सभी गतिविधियों में चिंतन शामिल है

चिंतन को विभिन्न रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है कुछ सामान्य प्रकार की चिंतन इस प्रकार हैः

1) प्रत्यक्षणात्मक या ठोस चिंतनः यह किसी ठोस वस्तु की धारणा के लिए किया गया सबसे सरल रूप है यदि आपसे 'आपकी पसंदीदा पुस्तक' पर चार वाक्य लिखने के लिए कहा जाता है, तो आप जिस चिंतन का उपयोग कर रहे हैं, वह प्रत्यक्षणात्मक चिंतन है
2) अवधारणात्मक या सार चिंतनः प्रत्यक्षणात्मक चिंतन से बेहतर इसमें किसी समस्या को हल करने के लिए अवधारणाओं, प्रतीकों या भाषा का उपयोग करना शामिल है
3) परावर्तक चिंतनः यह एक अंतर्दृष्टि आधारित चिंतन है जो किसी समस्या को हल करने के लिए पिछले अनुभवों का उपयोग करती है
4) रचनात्मक चिंतनः नए और नवीन विचारों या वस्तुओं को बनाने में शामिल चिंतन। इसमें कुछ नया बनाने के लिए मौजूदा उत्तेजनाओं को पुनर्व्यवस्थित करना शामिल है
5) आलोचनात्मक चिंतनः इस प्रकार की चिंतन में तर्कपूर्ण निर्णय लेने और मान्यताओं की जांच करना शामिल है

5.3 चिंतन की प्रक्रियाः मानसिक कल्पना, अवधारणा और प्रस्ताव

हम या तो शब्दों या मानसिक छवियों में सोचते हैं जिस विचार को हम अपने मन में बयानों या शब्दों के रूप में "सुनते" हैं उसे प्रस्ताव विचार के रूप में जाना जाता है "किसी को पानी बर्बाद नहीं करना चाहिए" या "काला एक सुंदर रंग है" जैसे वाक्य कुछ प्रस्ताव या दावा कर रहे हैं इसलिए, इसे प्रस्तावक विचार कहा जाता है चिंतन का एक अन्य तरीका दृश्य विचार या काल्पनिक विचार है यह विचार का प्रकार है जिसे हम अपने मन में देखते हैं ये (प्रस्तावक विचार और काल्पनिक विचार) चिंतन के दो प्राथमिक तरीके हैं

काल्पनिक विचार को समझने के लिए, पहले, हमें "मानसिक छवियों" को समझने की जरूरत है और प्रस्तावित विचार को समझने के लिए, हमें "अवधारणा" को समझने की आवश्यकता है

5.3.1 पिक्चर्स इन योर माइंडः मेंटल इमेजरी

मान लीजिए, आपको अपने दोस्त द्वारा बताया गया कि उसने अपने बगीचे में बेरंग चोंच वाले एक सुंदर पीले पक्षी को देखा यदि आप उसके वर्णन पर पर्याप्त ध्यान दे रहे हैं, तो आप उस पक्षी की एक दृष्य छवि मन में बना सकते हैं आपके द्वारा बनाई गई पक्षी की दृष्य छवि को 'मानसिक छवि' के रूप में जाना जाता है, यह उन उत्तेजनाओं का एक मानसिक प्रतिनिधित्व है जो वर्तमान में संवेदी इंद्रियों द्वारा प्रत्यक्षीकृत नहीं किया जा रहा (मौलटन और कोसलिन, 2009)

5.3.2 संकल्पना

"एक अवधारणा पूरे वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है; यह उन गुणों का समूह है जिन्हें हम एक विशेष वर्ग के साथ जोड़ते हैं "(एटकिंसन एंड हिलगार्ड, 2009, पृष्ठ 332) उदाहरण के लिए, 'कार' की हमारी अवधारणा में चार पहिए, पेट्रोल इंजन, स्टीयरिंग और सीटें शामिल हैं अवधारणाओं से हमें हमारी दुनिया को प्रबंधनीय जानकारी में वर्गीकृत करके हमें अपनी मानसिक जटिलता को कम करने में मदद मिलती है इसके अलावा, यह हमें अवधारणाओं के प्रोटोटाइप विकसित करने में मदद करता है एक प्रोटोटाइप अवधारणा का विशिष्ट उदाहरण या अवधारणा के सर्वोत्तम उदाहरण का प्रतिनिधित्व करने वाली विशेषताओं का एक सेट है उदाहरण के लिए, 'कार' की अवधारणा के लिए, हमारे प्रोटोटाइप में चार पहिए और एक पेट्रोल इंजन जैसे गुण शामिल हो सकते हैं हम लक्ष्यित वस्तु की तुलना प्रोटोटाइप से करते हैं और समानता से तय करते हैं कि लक्ष्य वस्तु श्रेणी की है या नहीं

5.3.3 प्रस्ताव

कई शोधकर्ताओं ने प्रस्तावित किया कि चिंतन केवल छवियों या शब्दों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह अमूर्त भी है। इस दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए कुछ शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तावित सिद्धांत दिया गया था जिसमें बताया गया कि प्रस्ताव मानसिक प्रतिनिधित्व का एक रूप है, लेकिन वो न तो शब्दों के रूप में और न ही छवियों के रूप में यह अवधारणाओं के बीच संबंध के अंतर्निहित अर्थ को संदर्भित करता है सरल शब्दों में, यह सबसे छोटा कथन है जिसे सही या गलत के रूप में आंका जा सकता है उदाहरण के लिए, 'पेड़ हरे हैं' यह कथन दो तर्कों (पेड़, हरे) के साथ कोडित सबसे छोटे प्रस्ताव का प्रतिनिधित्व करता है

सोचना निष्क्रिय कार्य नहीं है; हम अपनी दुनिया को बेहतर तरीके से समझने के लिए एक अवधारणा को दूसरे से संबंधित रखते हैं प्रस्ताव सिद्धांत के अनुसार, जिसे वैचारिक–प्रपोजल थ्योरी भी कहा जाता है, हम केवल शब्दों या छवियों के बारे में नहीं, बल्कि अर्थों के बारे में भी सोचते हैं। इस प्रकार हम एक साथ संबंधित अवधारणाओं द्वारा अर्थ के रूप में हमारी दुनिया का प्रतिनिधित्व करते हैं "हम अपने मानसिक प्रतिनिधित्व को छवियों के रूप में अनुभव कर सकते हैं, लेकिन ये छवियां उपफल हैं – विशिष्ट और व्युत्पन्न घटनाएं जो कि अन्य अधिक बुनियादी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप होती हैं प्रपोजल थ्योरी के अनुसार, हमारी मानसिक प्रतिनिधित्व (जिसे कभी–कभी "मेंटलिस" भी कहा जाता है) एक प्रस्ताव के अमूर्त रूप के समान होती है (स्टर्नबर्ग, 2012, पृष्ठ 281)

5.4 रचनात्मकता की संकल्पना

एक मूल और नवीन विचार या वस्तु बनाने की क्रिया को रचनात्मकता के रूप में जाना जाता है एक व्यक्ति को रचनात्मक बनने के लिए वैज्ञानिक या कलाकार होने की आवश्यकता नहीं है। यह सभी प्रकार की दैनिक गतिविधियों जैसे खाना पकाने, पढ़ाने, अन्य की मदद करने, अभिनय आदि में भी पाया जा सकता है गिलफोर्ड के अनुसार, समस्या समाधान के व्यवहार में दो प्रकार के चिंतन शामिल हैं, जैसे कि अभिसारी चिंतन और अपसारी चिंतन। जिन समस्याओं का केवल एक सही समाधान होता है उन्हें, अभिसारी चिंतन के रूप में जाना जाता है जबकि, जब किसी समस्या का एक से अधिक सही समाधान होता है तो वह अपसारी चिंतन का उपयोग करता है अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दोः

- भारत को स्वतंत्रता कब मिली?
- पेपर क्लिप के विभिन्न उपयोग क्या हैं?

पहले प्रश्न में अभिसारी चिंतन शामिल है जबकि दूसरे में अपसारी चिंतन शामिल है गिलफोर्ड के अनुसार, रचनात्मकता के लिए अपसारी चिंतन जिम्मेदार है अध्ययनों ने यह भी सुझाव दिया है कि जो लोग अपसारी चिंतन पर अधिक हैं वे दूसरों की तुलना में अधिक रचनात्मक हैं

5.4.1 रचनात्मक चिंतन के चरण

वालेस (1926) ने रचनात्मकता में शामिल चरणों के वर्गीकरण का प्रस्ताव दिया। उन्होंने प्रस्तावित किया कि रचनात्मकता में चार चरण शामिल हैं, जैसा कि नीचे वर्णित हैः

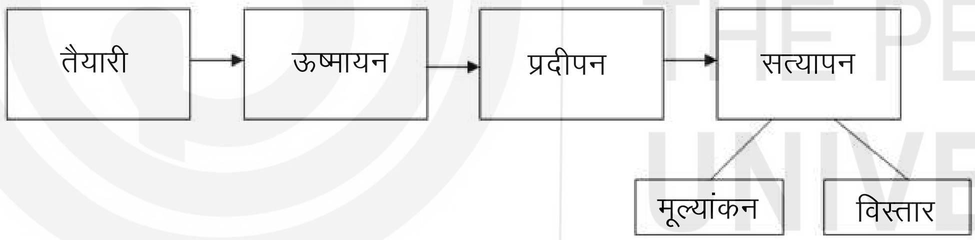

चित्र 5.2: रचनात्मक चिंतन के चरण

स्रोतः http://www.docente.unicas.it

प्रथम चरणः तैयारी (Preparation)

यह तात्कालिक समस्या के बारे में कच्चे माल को इकट्ठा करने का चरण है। किसी भी व्यक्ति को पिछले काम के बारे के ज्ञान में अंतराल, और पिछले समाधान के दौरान आयी समस्याओं से परिचित होना चाहिए, ताकि वह तात्कालिक समस्या को समझ सके। यह प्रक्रिया समस्या पर अधिक काम करने के लिए प्रेरित करती है इस अवस्था में, अपसारी चिंतन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

द्वितीय चरणः ऊष्मायन (Incubation)

समाधान खोजने की प्रक्रिया के दौरान, व्यक्ति अटक सकता है क्योंकि, वह समाधान खोजने में उस समय सक्षम नहीं होता है इस चरण के दौरान, व्यक्ति सचेत रूप से समस्या के बारे में चिंतन नहीं करता है, लेकिन उसकी मानसिक प्रक्रियाएं अनजाने में समाधान खोजने में तत्पर रहती हैं अध्ययन से पता चलता है कि कई रचनात्मक विचार ऊष्मायन चरण के दौरान आते हैं, जब व्यक्ति निष्क्रिय अवस्था में होता है और समस्या पर सक्रिय रूप से काम नहीं कर रहा होता है ।

तृतीय चरणः प्रदीपन (Ilumination)

यह 'अहा' या 'यूरेका' क्षण का चरण है यह अनुभव तात्कालिक समस्या का तुरंत समाधान या अंतर्दृष्टि का परिणाम है मशहूर आर्किमिडीज़ एंड गोल्डन क्राउन' की कहानी इसी प्रसिद्ध रोशन मंच के इर्द–गिर्द घूमती है, जहाँ वह अचानक एक अनसुलझी पहेली को सुलझा लेते हैं।

चतुर्थ चरणः सत्यापनः मूल्यांकन और विस्तार (Verification: Evaluation and Elaboration)

इस अंतिम चरण के दौरान, अंतर्दृष्टि का मूल्य या योग्यता व्यक्ति द्वारा आंकी जाती है यह पूरी तरह से जागरूक चरण है, जिसमें व्यक्ति प्रदीपन के चरण के दौरान प्राप्त समाधान के मूल्य का, मूल्यांकन करता है समस्या हल करने वाला व्यक्ति प्राप्त समाधान को सत्यापित करने के लिए अपने मौजूदा ज्ञान पर विश्वास करता है रचनात्मकता पर किए गए अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि यह आवश्यक नहीं है कि रचनात्मक अंतर्दृष्टि हमेशा वास्तविकता में आकर्षक होगी, कभी–कभी यह बुरे विचारों के रूप में भी सामने आ सकती है

5.5 समस्या का समाधानः एक अवधारणा

आइए इस भाग को मैयर (1931) के प्रसिद्ध "द टू स्ट्रिंग प्रॉब्लम" से शुरू करते हैं।

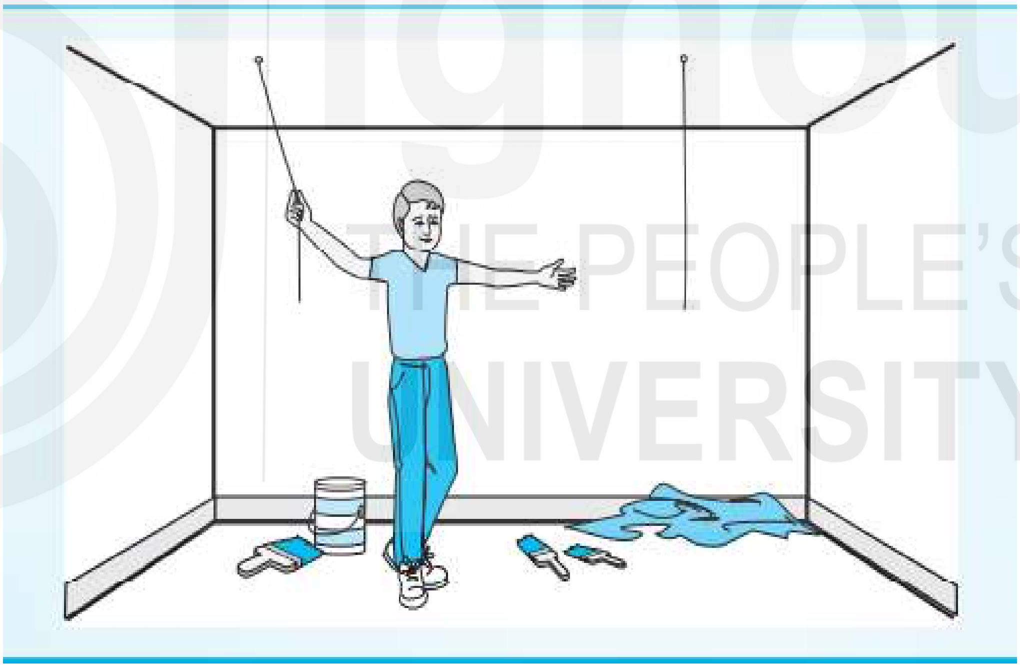

चित्र 5.3:दो स्ट्रिंग समस्या, स्रोत स्टर्नबर्ग (2012)

"कल्पना कीजिए कि आप इस कमरे के बीच में खड़े व्यक्ति हैं, जिसमें दो तार छत से नीचे लटक रहे हैं आपका लक्ष्य दो तारों को एक साथ जोड़ना है, लेकिन स्ट्रिंग काफी लंबी नहीं है जिससे आप दोनों तारों में से किसी एक को पकड़ते हुए दूसरे स्ट्रिंग को पकड़ सकें आपके पास कुछ साफ पेंटब्रश, पेंट की कैन और एक भारी कैनवास तिरपाल उपलब्ध है। आप दो तारों को एक साथ कैसे बांधेंगे? "(स्टर्नबर्ग, 2012, पृष्ठ.444)

आप इस समस्या को कैसे हल कर सकते हैं? इसे हल करने के लिए आप क्या कदम उठाते हैं? सामान्य तौर पर, हम अपने सामने आने वाली किसी भी समस्या का समाधान कैसे करते हैं? सबसे पहले, समस्या क्या है? इस भाग में, हम इन सवालों के जवाब देंगे और अन्य संबंधित मनोवैज्ञानिक कारकों पर चर्चा करेंगे।

एक समस्या, आपके लक्ष्य के लिए एक बाधा है इसलिए, समस्या–समाधान को आपके लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इन बाधाओं के हल पाने के व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। एक सामान्य समस्या–समाधान प्रक्रिया सात चरणों का अनुसरण करती हैः

1) **समस्या की पहचानः** यह समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया के लिए एक पूर्व शर्त है एक समस्या को तभी हल किया जा सकता है जब उसे समस्या के रूप में पहचाना जाए।

2) **समस्या की परिभाषाः** इस चरण में, समस्या की प्रकृति, अर्थ और व्यापकता की पहचान की जाती है।

3) **रणनीति तैयार करनाः** इस चरण में समस्या से निपटने या हल करने के तरीकों की खोज शामिल यानी संभावित समाधान तैयार करना शामिल है।

4) **सूचना का संगठनः** समस्या और उसके प्रस्तावित समाधान के बारे में सभी जानकारी एकत्र करना और व्यवस्थित करना शामिल है। स्टर्नबर्ग (2012) के अनुसार, इस चरण में "यह अनुसरण होता है कि समस्या के समाधान के लिये कौनसी उपलब्ध सूचनाओं की टुकड़ियाँ सबसे सटीक हैं?" इस पर कार्य किया जाता है।

5) **संसाधनों का आवंटनः** यह तय करने के बाद कि कौन सी रणनीति उपयुक्त है और चयनित रणनीति का पालन कैसे करना है, इस चरण में समस्या को हल करने में उचित रूप से संसाधनों (समय, धन, प्रयास, आदि) के आवंटन के बारे में निर्णय लिया जाता है। यह तय किया जाता है कि समस्या को हल करने के लिये कैसे आगे बढ़ना है?

6) **निगरानी :** किसी समस्या को सफलतापूर्वक हल करने के लिए, इस चरण में व्यक्ति को उस मार्ग या तरीक़े को लगातार जांचने या पुनर्मूल्यांकित करने की आवश्यकता होती है जिसे उसने चुना था।

7) **मूल्यांकनः** समस्या–समाधान प्रक्रिया के इस अंतिम चरण में, समस्या को हल करने के प्रयास की सफलता या विफलता के बारे में निर्णय किया जाता है।

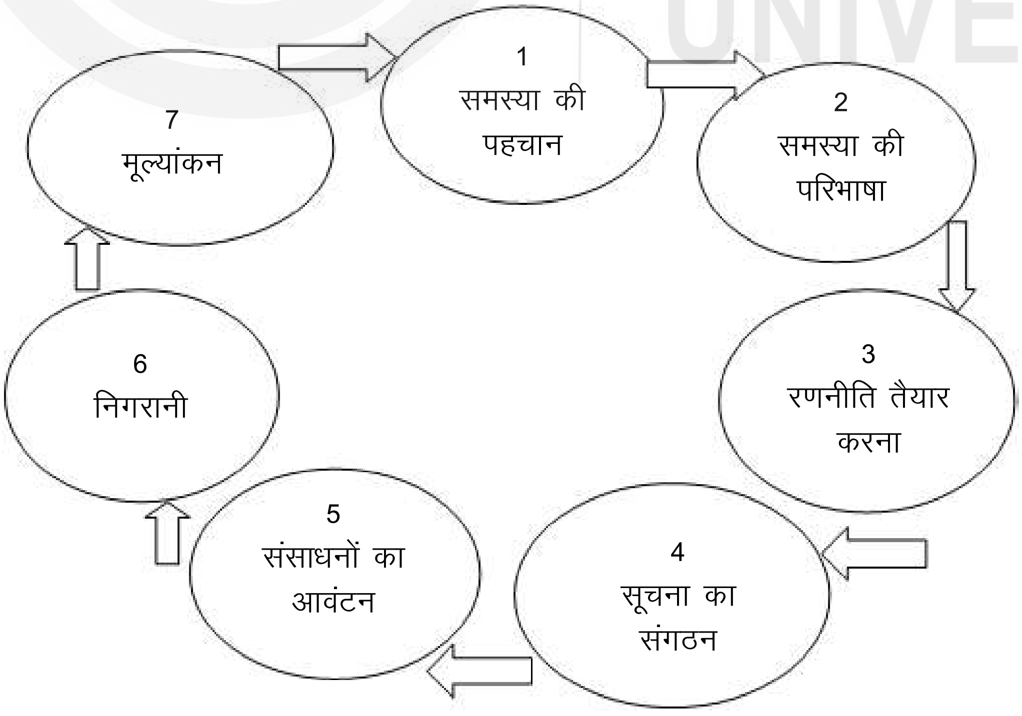

चित्र 5.4: समस्या–समाधान प्रक्रिया के सात चरण

5.5.1 समस्या हल करने में बाधाएं

समस्या–समाधान की प्रक्रिया में लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रभावी ढंग से बाधाओं पर काबू पाने की आवश्यकता होती है हालांकि, कभी–कभी लक्ष्य प्राप्ति करने वाला व्यवहार कुछ बाधाओं से बाधित होता है। इस भाग में, हम उन कारकों के बारे में बात करेंगे जो हमारी समस्या को सुलझाने की क्षमता में बाधा डालते हैं।

मानसिक वृत्ति या प्रत्यक्षणात्मक वृत्तिः किसी समस्या को हल करने में पूर्व में इस्तेमाल की गई मानसिक रणनीति का अति प्रयोग (बार बार प्रयोग) करने की हमारी प्रवृत्ति को मानसिक वृत्ति या मानसिक सेट कहा जाता है उस विशेष रणनीति के साथ हमारा पिछला सफल अनुभव हमें हर बार इसे चुनने के लिये पूर्वाग्रह बनाता है। इस प्रकार, जब हम एक नई समस्या का सामना करते हैं, तो हम पहले से ही आज़मायी और परखी गई तकनीक से चिपके रहते हैं। मानसिक वृत्ति को 'वृत्ति प्रभाव' के रूप में भी जाना जाता है।

अब, निम्नलिखित प्रसिद्ध 'नौ–डॉट समस्या' को हल करने का प्रयास करें अपनी कलम को उठाए बिना आपको केवल तीन या चार सीधी रेखाओं का उपयोग करके इन नौ बिंदुओं से जुड़ना होगा।

चित्र 5.5: नौ डॉट समस्या

प्रकार्यात्मक स्थिरताः हमारी प्रवृत्ति में वस्तुओं को केवल सामान्य या नियत कार्य के प्रकाश देखने की आदत होती है इस प्रकार से हमें, उन समस्याओं को हल करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है जिनमे वस्तुओं के नवीन या नए तरह से उपयोग करने की आवश्यकता होती है यदि आप पिछले अनुभाग में चर्चा की गई मैयर की दो स्ट्रिंग समस्या को हल करने में सक्षम नहीं थे, तो आप अपनी अक्षमता का कारण प्रकार्यात्मक स्थिरता को कह सकते हैं।

अपूर्ण प्रतिनिधित्व का उपयोग करनाः आप समस्या के बारे में प्रारंभिक जानकारी कैसे संसाधित करते हैं, यह समस्या को सफलतापूर्वक हल करने के आपके अवसरों को भी प्रभावित करता है एक गलत व्याख्या गलत प्रतिनिधित्व को जन्म देगी, जो बदले में गलत समाधान का कारण बनती है।

विशेषज्ञता या बुद्धि का अभावः इसका मतलब यह है कि क्या आप दी गई समस्या को हल करने की बौद्धिक क्षमता रखते हैं या नहीं? यदि आपके पास पर्याप्त विशेषज्ञता है तो ही आप इसे हल कर पाएंगे आपको क्या लगता है, यदि आप पहली कक्षा के एक छात्र को बीजगणित की समस्या देते हैं, तो क्या वह इसे हल करने में सक्षम होगा? नहीं, क्योंकि वह इसे हल करने के लिए पर्याप्त बुद्धि या विशेषज्ञता नहीं रखता है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

प्रेरणा की कमी: भले ही आप एक समस्या को हल करने की सभी क्षमता रखते हैं, लेकिन प्रेरणा की कमी आपके अवसरों को प्रभावी ढंग से हल करने में बाधा डाल सकती है इसलिए, शुरुआती परीक्षणों में विफलता का सामना करने के बाद भी हमें अपने प्रेरक स्तर को बनाए रखना आवश्यक है।

भावनात्मक ब्लॉक: किसी समस्या को प्रभावी ढंग से हल करने की आपकी क्षमता आपकी भावनात्मक स्थिति गंभीर रूप से बाधित कर सकती है मान लीजिए, यदि आपको मंच से भय (स्टेज फोबिया) है, तो इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि आप अपनी कक्षा के ब्लैकबोर्ड पर गणितीय समस्या को प्रभावी ढंग से हल नहीं कर पाएंगे क्योंकि मंच से भय, तनाव और चिंता की ओर ले जाता है और ये भावनाएं आपके प्रदर्शन को बाधित करेंगी।

स्व मूल्यांकन प्रश्न 1

बताएं कि क्या निम्नलिखित 'सही' या 'गलत' हैं:

1) सोच एक उच्च मानसिक प्रक्रिया नहीं है ( )

2) प्रकार्यात्मक स्थिरता वस्तुओं को केवल सामान्य या नियत कार्य के प्रकाश देखने की आदत को संदर्भित करती है ( )

3) एक समस्या आपके लक्ष्य के लिए एक बाधा या रुकावट है" ( )

4) एक अवधारणा गुणों का समूह है जिसे हम एक विशेष वर्ग के साथ जोड़ते हैं ( )

5) आलोचनात्मक चिंतन एक अंतर्दृष्टि आधारित सोच है जो किसी समस्या को हल करने के लिए पिछले अनुभवों का उपयोग करती है ( )

5.6 निर्णय लेनाः विकल्पों में से चुनना

हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में, यह चुनने के लिए कि पार्टी में जाने के लिए क्या पहनना है, और किस उपन्यास को पढ़ना है, हमें अपनी प्राथमिकताएं बनानी पड़ती हैं और उपलब्ध विकल्पों में से चुनना पड़ता है वह संज्ञानात्मक प्रक्रिया, जिसमें आप उपलब्ध विकल्पों का मूल्यांकन करके किसी एक विकल्प का चयन करते हैं, निर्णय लेने के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि निर्णय लेना एक प्रकार की समस्या को सुलझाने वाला व्यवहार है जहाँ आप पहले से ही सभी संभावित समाधानों से अवगत हैं और आपको उनके बीच चयन करना है

5.6.1 निर्णय लेने की प्रक्रिया

जब हम कोई निर्णय लेते हैं तो आमतौर पर हम किन चरणों का पालन करते हैं? मनोवैज्ञानिकों के अनुसार हमारी निर्णय लेने की प्रक्रिया में निम्नलिखित छह चरण शामिल हैं:

समस्या की पहचान: निर्णय लेने के लिए, सबसे पहले आपके पास एक समस्या होनी चाहिए। तो, इस स्तर पर, सर्वप्रथम समस्या की पहचाना की जाती है जिस पर निर्णय करना है (उदाहरण के लिए: मैं अपने मित्र के विवाह समारोह में क्या पहनूंगी?)

विकल्प उत्पन्न करना: समस्या की पहचान करने के बाद, सभी संभावित विकल्प उत्पन्न होते हैं (या तो साड़ी, सलवार–सूट, या लहंगा ?)

विकल्पों का मूल्यांकन : हम सभी उत्पन्न विकल्पों का मूल्यांकन करते हैं जो इसकी लागतों और लाभों के बारे में बताते हैं (आज का मौसम अन्य दिनों की तुलना में थोड़ा ठंडा है और मेरी तबियत भी ठीक नहीं लग रही। इसलिये अगर मैं सलवार–सूट पहनू तो मेरे लिए सबसे अच्छा होगा क्योंकि यह मुझे लेहंगा या साड़ी से बेहतर ठंडी लहरों से बचा सकता है।)

एक विकल्प चुनना: इस चरण में, सबसे अच्छा संभव विकल्प चुना जाता है (सलवार–सूट)।

निर्णय को लागू करना: इस आख़िरी चरण में, जिसमें आप अपने चयनित विकल्प को लागू करते हैं (कपड़े को इस्त्री कर के पहनना)

निर्णय क्षमता का मूल्यांकन: इस अंतिम चरण में, आप अपने निर्णय का मूल्यांकन करते हैं और आवश्यकता के अनुसार इसे संषोधित करते हैं (आईने में देख कर, तय करते हैं कि वह पहनावा अच्छा लग रहा है लेकिन सैंडल बदलूं तो ज्यादा अच्छा लगेगा।)

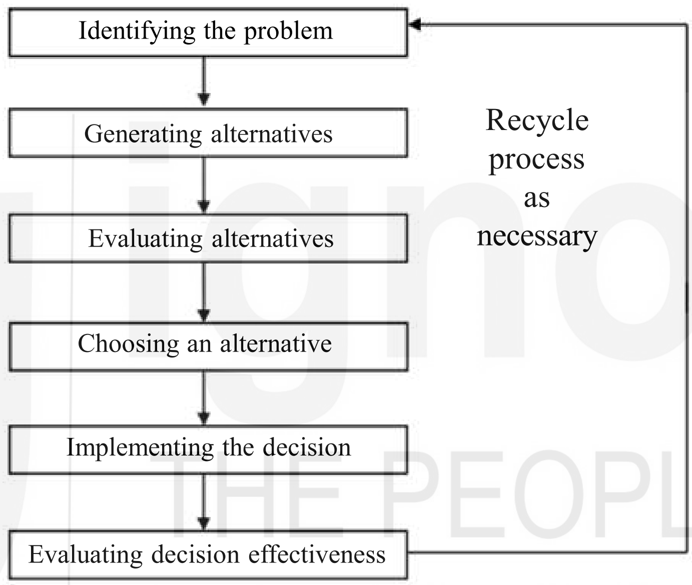

चित्र 5.6: निर्णय लेने की प्रक्रिया

स्रोतः लुनबर्ग (2010)

5.6.2 निर्णय लेने में संज्ञानात्मक त्रुटियां

जैसा कि पिछली इकाई "प्रत्यक्षण" में चर्चा की गई है, कि हमारा मस्तिष्क हर सेकंड पर्यावरण से अनगिनत जानकारी प्राप्त करता है, जिससे मानसिक प्रक्रियाओं पर जबरदस्त संज्ञानात्मक भार आता है अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि इस संज्ञानात्मक भार का प्रबंधन करने के लिए हम अनजाने में कुछ मानसिक सूत्रों का उपयोग करते हैं। एक ओर, ये मानसिक सूत्र हमें निर्णय लेने में तेज़ी लाने में मदद करते हैं, जबकि दूसरी ओर, यह गलत निष्कर्ष, यानी संज्ञानात्मक त्रुटि की ओर भी ले जाते हैं निम्नलिखित को पढ़ने से आपको गलत निर्णय के लिए जिम्मेदार कारकों को समझने में मदद मिलेगी। मोटे तौर पर, संज्ञानात्मक त्रुटियों के दो स्रोत हैं: स्वतः शोध या अनुमान और पूर्वाग्रह

5.6.2.1 स्वतः शोध/अनुमान (Heuristics)

यह एक मानसिक शॉर्टकट है जो संज्ञानात्मक भार को कम करके जल्दी से निर्णय लेने में हमारी मदद करता है। भले ही ये अनुमान रोज़मर्रा के निर्णय लेने में बहुत मददगार हों, लेकिन यह हमेशा एक त्रुटि रहित प्रक्रिया नहीं है कभी–कभी, यह एक गलत निर्णय के लिए भी ज़िम्मेदार होता है निम्नलिखित कुछ प्रमुख प्रकार के अनुमान या मानसिक शॉर्टकट हैं:

1) **प्रतिनिधि स्वतः शोधः** हम इस मानसिक शॉर्टकट का उपयोग करते हैं जब हमें संभावना (Probability) के बारे में निर्णय करना होता है यह उस उद्दीपक के अन्य उद्दीपकों से सामान्यता हमें यह तय करने में मदद करती है कि क्या एक उद्दीपक या उत्तेजना किसी विशेष श्रेणी से संबंधित है या नहीं।

2) **उपलब्धता स्वतः शोधः** उपलब्धता हेयुरिस्टिक बताते हैं कि जिस सहजता से किसी उदाहरण को याद किया जा सकता है या हमारे दिमाग में उपलब्ध है उसे अधिक प्रचलित माना जाता है इस प्रकार, यह अनुमानी घटना हमारे मन में उपलब्धता की आवृत्ति के आधार पर किसी घटना के महत्व को दर्शाती है।

3) **फ़्रेमिंग प्रभावः** एक ही संदेश को अलग–अलग तरीके से व्याख्या करने की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है कि इसे कैसे प्रस्तुत किया गया है या फ्रेम किया गया है।

4) **एंकरिंग और एडजस्टिंग स्वतः शोधः** इस स्वतः शोध के अनुसार, एक निर्णय लेने के लिए हम एक संदर्भ बिंदु के साथ शुरू करते हैं–एक एंकर के तौर पर और फिर हम नई जानकारी के साथ अपने निर्णय का मूल्यांकन और समायोजन करते हैं।

5.6.2.2 पूर्वाग्रह (Biases)

इस खंड में, हम कुछ ऐसे पूर्वाग्रह पर चर्चा करेंगे जो निर्णय लेते समय अक्सर होते हैंः

1) **सह–सम्बंधी भ्रम :** संख्यकीय में, सहसंबंध का अर्थ है, दो चर का सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध है। इस प्रकार, सह–सम्बंधी भ्रम उस स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें हम दो चर के बीच अनुचित सार्थक संबंध मानते हैं उदाहरण के लिए, प्रचलित रूढ़ियों से किसी को आंकना।

2) **अति आत्मविश्वास :** निर्णय लेने वालों में अपने कौशल और क्षमता को अधिक सक्षम की प्रवृत्ति होती है, जिससे अक्सर गलत निर्णय होता है हम अपने निर्णय में अति आत्मविश्वास क्यों करते हैं? क्योंकि हम अपने पिछले वास्तविक प्रदर्शन को नजरअंदाज करते हैं और गलत के रूप में अपना मूल्यांकन नहीं करना चाहते हैं

3) **पश्च दृष्टि पूर्वाग्रह :** इसे "मुझे पहले से ही सब पता था" प्रभाव के रूप में भी जाना जाता है। पश्च दृष्टि पूर्वाग्रह तब होता है जब पूर्वव्यापी रूप से एक समस्या की स्थिति के बारे में चिंतन कर रहे लोगों का दावा है कि वे अतीत में समस्या की स्थिति के परिणाम के बारे में पहले से जानते थे

4) **पुष्टिकरण पूर्वाग्रह :** "यह केवल उस जानकारी की खोज करने की प्रवृत्ति है जो किसी के शुरुआती विचार या परिकल्पना की पुष्टि करेगी और अन्य जानकारी को अनदेखा या नज़रंदाज़ करेगी" (गालोटी, 2015)।

5.7 संकल्पना, प्रकृति और भाषा का दायरा

मनुष्य एक जानवर है लेकिन जानवरों की अन्य प्रजातियों से अलग है तो, मनुष्य को दूसरों से अलग कौन सा गुण करता है? यह जानकारी संवाद करने की क्षमता भाषा है – प्रतीकों, ध्वनियों, इशारों के संयोजन के नियमों का एक जटिल सेट का उपयोग करके अपने विचारों को दूसरों को संप्रेषित करना भाषा है। भाषा इशारों, वक्तव्य और लेखन के माध्यम से व्यक्त की जाती है।

भाषा मनोविज्ञानियों के अनुसार, एक भाषा निम्नलिखित घटकों से मिलकर बनती हैः

1) **स्वर/फोनीम (Phonemes)**: यह बोली जाने वाली भाषा की सबसे छोटी या बुनियादी इकाई है "कलम" शब्द में तीन स्वर हैं 'क,' 'ल' और, 'म'

2) **मोरफ़ीम** (Morphemes): मोरफ़ीम अर्थ की सबसे छोटी इकाई है फोनीम्स (Phonemes) से जुड़कर मोरफीम है, जैसे कि "रीमेक" शब्द, दो शब्दों "रि–" और "मेक" से मिलकर बनता है

3) **शब्दार्थ**: यह नियमों के समुच्चय को संदर्भित करता है जिसके द्वारा हम शब्दों और वाक्य के अर्थ को समझते हैं। उदाहरण के लिए, शब्द के अंत में "–मक" जोड़ना भूतकाल को दर्शाता है

4) **वाक्य–विन्यास/सिंटेक्स**: ये व्याकरण के नियम हैं जो बताते हैं कि अर्थपूर्ण वाक्य बनाने के लिए विभिन्न शब्दों को कैसे जोड़ा जा सकता है

5) **उपयोगितावाद/व्यावहारिकत (Pragmatics):** भाषा से संबंधित सामाजिक नियम उदाहरण के लिए किसी को बड़े वयस्कों से कैसे बात करनी चाहिए, सार्वजनिक या निजी तौर पर, कह सकते है

5.7.1 भाषा का विकास

भाषा विकास संज्ञानात्मक विकास का एक अनिवार्य पहलू है अध्ययनों ने बताया है कि बच्चों में भाषा के विकास में वैयक्तिक भिन्नता पायी जाती है। कुछ बच्चे दूसरों की तुलना में अधिक तेजी से भाषा सीखते हैं। फिर भी, 5 वर्ष की आयु तक, अधिकांष बच्चों की भाषा वयस्क की भाषा के समान हो जाती है निम्नलिखित अनुभाग में, हम सीखेंगे कि हम भाषा कैसे सीखते हैं। पहले हम शिशुओं में भाषा विकास पर चर्चा करेंगे फिर बच्चों के संदर्भ में भाषा विकास पर चर्चा की जाएगी।

5.7.1.1 शिशुओं में भाषा

- **नवजात में वाक् बोध**

  भाषा अधिग्रहण चरण की शुरुआत उनकी भाषा की सबसे छोटी ध्वनि इकाइयों, यानी, ध्वनि, के बीच अंतर करने की क्षमता के साथ शुरू होती है अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि नवजात शिशु न केवल स्वरों को पहचानने में बल्कि विभिन्न स्वरों में अंतर पहचानने में भी बहुत कुशल होते हैं।

- **नवजात में भाषा की समझ**

  क्या शिशु भाषा को समझ सकते हैं? इसका उत्तर देने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं। जिनमें चार से पांच महीने की उम्र के बीच के शिशुओं ने अपने सिर को उस स्थान पर घुमाया जहां से उनका नाम बोला गया था, यह सुझाव देता है कि वे अपना नाम पहचान सकते हैं। इसके अलावा, वे "बोलने वाले के चेहरे की अभिव्यक्ति और बोलने वाले की आवाज़ के भावनात्मक स्वर के बीच के सम्बंध" को समझ सकते हैं (मैटलिन, 2009, पृष्ठ 479)। बच्चे आमतौर पर लगभग छह महीने में अपना नाम तथा "बोतल," "मामा," और "कुत्ता" जैसे शब्द 10 से 12 महीने (मंडेल, जुस्कोज़ी और पिसनी, 1995) में समझने लगते हैं।

- **नवजात में भाषा उच्चारण**

  शिशुओं में भाषा उच्चारण की एक श्रृंखलाबद्ध चरणों का अनुसरण होता है। दो महीने की उम्र तक जानबूझकर मुखरता उत्पन्न करने वाले षोर के साथ , यह एक स्वर ध्वनि उत्पन्न करता (जैसे, ऊ) जब तक शिशु छह से आठ महीने की उम्र तक नहीं पहुंच जाता, तब तक शिशु बड़बड़ाते हुए काम करने लगते हैं, "एक स्वर जो व्यंजन

और स्वर दोनों का उपयोग करता है, अक्सर दादा जैसी श्रृंखला में ध्वनियों को दोहराता है" (मैटलिन, 2009, पृष्ठ 480)। इसके अलावा, शिशु वयस्कों के साथ संवाद करने के लिए विभिन्न प्रकार के इशारों का उपयोग करते हैं शिशुओं ने अपने सिर को "नहीं" लगभग 6–9 महीनों में हिला दिया, और वे "बाय–बाय" जैसी चीजों के लिए मौखिक अनुरोधों का जवाब देते हैं तथा 9–12 महीनों के आसपास "एक चुंबन उड़ा के देने का इशारा करते है"।

5.7.1.1 बच्चों में भाषा

विभिन्न अध्ययनों के अनुसार, एक वर्ष का होने पर अधिकांष शिशु अपना पहला शब्द बोलना शुरू कर देते हैं। इस अनुभाग में, शिशुओं और बच्चों द्वारा बोली जाने वाली प्रारंभिक शब्दों की विशेषताओं पर चर्चा करेंगे। बच्चें कैसे व्याकरणिक नियम का उपयोग करते हैं और अंत में, हम सीखेंगे कि बच्चे व्यावहारिकता, यानी भाषा के सामाजिक नियमों को कैसे सीखते हैं।

- **शब्द**

पहला शब्द जो बच्चे बोलते हैं वह वस्तुओं, लोगों या कभी–कभी उनकी गतिविधियों से संबंधित होता है एक वर्ष की आयु तक बच्चे अपने विकास की गति के आधार पर 12 से 52 शब्दों के बीच बात कर सकते हैं 12 या 13 महीने का एक बच्चा अक्सर अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए आंषिक शब्दों का उपयोग करने लगते हैं, जैसे कि "पानी" के लिए "मम" या "कुत्ते" के लिए "कुकु" ये आंषिक शब्द एक विचार व्यक्त कर रहे हैं, जिसे होलोफ्रेज़ भाशण के रूप में जाना जाता है।

एक बार जब कोई बच्चा एक शब्द सीखता है, तो वह मूल संदर्भ के साथ अन्य सभी वस्तुओं को व्यक्त करने में अति प्रयोग करता है। इसे अति–विस्तार के रूप में जाना जाता है। इस घटना के विपरीत, बच्चे अल्प–विस्तार को दर्शाते हैं, जहां एक सीखे हुए शब्द का न्यूनतम उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी बच्चे को पता चला है कि उसके घर का जर्मन षेफ़र्ड कुत्ता है, तो कुत्तों की अन्य सभी नस्लों को कुत्ता नहीं बुलाएगा है।

आकृति ज्ञान (Morphology): शब्दों को सीखने के बाद, बच्चे जल्द ही मोरफ़ीमस जैसे कि –ed, –ing –s आदि, सीख कर उसका उपयोग करना शुरू कर देते हैं। एक अंग्रेजी बोलने वाला बच्चा डेढ़ से साढ़े तीन साल के बीच उचित रूप से मोरफ़ीमस का उपयोग करना सीख जाता है अध्यययनों के अनुसार वे पहले –ing और फिर –s के बाद –मक उपयोग करना सीखते हैं।

- **वाक्य – विन्यास (Syntax)**

18 से 24 महीने की उम्र के बीच, अक्सर बच्चे शब्दों को संयोजित करना शुरू कर देते हैं मनोवैज्ञानिकों के लिए रुचि का विषय हमेशा से बच्चों के वाक्य रचना (व्याकरण के नियम) का विकास रहा है। दूसरे जन्मदिन के अंत तक, बच्चे अपने संदेश को व्यक्त करने के लिए दो शब्दों का संयोजन शुरू कर देते हैं उदाहरण के लिए, "मम्मी ऐप्पल" का उल्लेख हो सकता है "मम्मी मैं एक सेब खाना चाहता हूं"। इस प्रकार के भाशण को "टेलीग्राफिक भाशण" के रूप में जाना जाता है, इस तरह की भाषा में व्याकरणिक कार्य करने वाले शब्द छोड़ दिए जाते हैं, और केवल संदेश दो या तीन शब्दों का उपयोग कर व्यक्त किया जाता है। अगले, एक से दो साल में, बच्चे जब अकेले होते हैं तो खुद में जोर ज़ोर से बात करते हैं। इस तरह के भाषण को

" पालना भाषा" (crib speech) के रूप में जाना जाता है , यह बच्चों द्वारा अपने भाषाई कौशल को निखारने के लिए निर्मित किया जाता है।

उपयोगितावाद / व्यावहारिकता: व्यावहारिकता भाषा के सामाजिक नियमों को संदर्भित करता है जैसा कि भाषा बातचीत का एक सामाजिक उपकरण है, इसके कुछ अंतर्निहित नियम हैं, जैसे कि, श्रोता के रूप में कैसे व्यवहार करें, किसी विशेष स्थिति में किसी को क्या कहना चाहिए और बातचीत में समन्वय कैसे करना चाहिए, ये इसके कुछ उदाहरण हैं अध्ययनों के अनुसार वयस्कों की तुलना में, बच्चे किसी टिप्पणी के पूरा होने की पहचान करने में असमर्थता के कारण अपनी बारी लेने में अधिक समय लेते हैं परिपक्वता के साथ, बच्चे "और फिर" वाक्यांष का उपयोग करना सीखते हैं जिससे वो अपने श्रोताओं को अपनी बात को जारी रखना चाहते हैं, का संकेत देते हैं बच्चे भी श्रोता के अनुसार अपनी भाषा को अनुकूलित करना सीखते हैं, यानी यदि छह साल के बच्चे का श्रोता उसका हम–उम्र है, तो उसके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा दो साल के बच्चे लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा से अलग होगी।

5.7.1.1.2 भाषा और विचार के बीच संबंध

हमारी भाषा का नियंत्रण हमारी चिंतन को नियंत्रित करती है या नहीं? यह कई दशकों से मनोवैज्ञानिकों और भाषा विज्ञान के बीच बहस का एक सवाल है भाषाई सापेक्षता परिकल्पना या व्हॉर्फियन सिद्धांत के अनुसार, हमारी भाषा हमारी सोचा को आकार देती है।

चित्र 7: होपी जनजाति की लड़कियां

स्रोत: https://in-pinterest-com

व्हॉर्फ (1956) ने प्रस्तावित किया कि भाषा में उपलब्ध शब्द हमारी चिंतन को प्रभावित करते हैं। इसलिए विभिन्न भाषाओं वाले लोग अलग तरह से चिंतन करते हैं उदाहरण के लिए, अमेरिका की होपी जनजाति का उनकी भाषा में कोई अतीत काल नहीं होता है इसलिए व्हॉर्फ के अनुसार, वे शायद ही कभी अतीत के बारे में सोचते होंगे।

इस बहस पर विरोधी विचार यह है कि हमारे विचार हमारी भाषा निर्धारित करते हैं यह बहस अभी भी जारी है। हालांकि, हाल ही में व्हॉर्फियन सिद्धांत का एक संषोधित संस्करण प्रस्तावित किया गया है कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार, हमारी भाषा हमारी चिंतन के सभी

पहलुओं को निर्धारित नहीं करती है। यह केवल उस तरह से प्रभावित करता है जिस तरह से लोग वस्तुओं के बीच संबंध के बारे में सोचते हैं (हंट एंड एग्नोली, 1991, लुसी, 1992)।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2

निम्नलिखित रिक्त स्थान भरें:

1) संज्ञानात्मक प्रक्रिया जिसका उपयोग विकल्पों का मूल्यांकन करने और चुनाव करने के लिए किया जाता है, को .... के रूप में जाना जाता है।

2) निर्णय लेने के लिए, सबसे पहले आपको ....करना होगा।

3) .... जीमवतल के अनुसार, हमारी भाषा हमारे विचार को आकार देती है।

4) शब्द सीखने के बाद, बच्चे जल्द ही .... का उपयोग करना शुरू कर देते हैं।

5) भाषा विकास .... विकास का एक अनिवार्य पहलू है।

5.8 सार-संक्षेप

यह उपरोक्त चर्चाओं से अभिव्यक्त किया जा सकता है कि, चिंतन एक उच्च मानसिक प्रक्रिया है हम चिंतन की प्रक्रिया में मानसिक छवियों, अवधारणाओं और प्रस्तावों का उपयोग करते हैं। रचनात्मकता एक प्रकार का चिंतन है जिसमें मूल और नवीन विचारों का निर्माण शामिल है अध्ययनों के अनुसार लोग, जो अपसारी चिंतन अधिक करते हैं, वे अधिक रचनात्मक हैं रचनात्मक चिंतन की प्रक्रिया में चार चरण शामिल हैं: तैयारी, ऊष्मायन, अंतर्दृष्टि और सत्यापन। हमने समस्या–समाधान व्यवहार की अवधारणा को भी समझा जो एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली बाधाओं को दूर करते हैं समस्या–समाधान की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के साथ–साथ उसमें आने वाली विभिन्न बाधाओं के प्रकारों पर भी चर्चा की गई। एक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया जिसमें चिंतन एक आवश्यक भूमिका निभाती है– वो है निर्णय लेना निर्णय लेने के चरणों के साथ साथ निर्णय लेने के दौरान होने वाली त्रुटियों पर भी इस इकाई में चर्चा की गई है इसके बाद, हमारी चर्चा का केंद्र भाषा थी। हमने भाषा के स्वरूप और घटकों पर चर्चा की, फिर भाषा के विकास पर चर्चा की गई। अंत में, भाषा और चिंतन के बीच के सम्बन्धों के साथ व्हॉर्फियन सिद्धांत पर जोर देते हुए चर्चा की गई।

5.9 इकाई के अंत में प्रश्न

- चिंतन को परिभाषित करें और चिंतन के किसी भी तीन स्वरूपों का वर्णन करें
- संक्षेप में चिंतन की प्रक्रिया में मानसिक छवि, अवधारणा और प्रस्ताव की भूमिका पर चर्चा करें
- रचनात्मकता से आप क्या समझते हैं? चर्चा करें कि अपसारी और अभिसारी चिंतन रचनात्मक चिंतन में कैसे भूमिका निभाती है
- 'मानसिक स्थिरता' से आपका क्या तात्पर्य है? समस्या–समाधान की प्रक्रिया में इसकी भूमिका पर गंभीर चर्चा करें
- समस्या–समाधान में स्वतः–षोध/अनुमान की क्या भूमिका है?
- स्वतः–षोध/अनुमान और पूर्वाग्रह संज्ञानात्मक त्रुटि के दो स्रोत हैं समझाएँ कैसे?

- भाषा के विकास पर एक टिप्पणी लिखें
- भाषाई सापेक्षता परिकल्पना क्या है?

5.10 शब्दकोष

चिंतन : एक उच्च मानसिक प्रक्रिया जो किसी की भाषा के प्रतीकों की मदद से की जाती है

समस्या का समाधान : लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में आने वाली बाधाओं को दूर करने का एक व्यवहारिक प्रयास

निर्णय लेना : एक प्रकार की समस्या को हल करने वाला व्यवहार, जिसमें हमें उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक चुनना होता है

मानसिक सेट : पहले प्रयोग में लायी गयी सफल समाधान योजना का उपयोग वर्तमान परिस्थिति/समस्या के लिए करने की हमारी प्रवृत्ति

भाषा : सूचनाओं को संप्रेशित करने के लिए, प्रतीकों का एक समूह है, जिनका संयोजन कुछ व्याकरणिक नियमों का उपयोग करके किया जाता है

कार्यात्मक स्थिरता : हमारी प्रवृत्ति केवल सामान्य या विशिष्ट कार्य के प्रकाश में वस्तुओं को देखने की है इस प्रकार, उन समस्याओं को हल करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है जिनके लिए वस्तुओं के नए तरह से उपयोग की आवश्यकता होती है

फ्रेमिंग इफेक्ट्स : एक ही संदेश की अलग–अलग तरीके से व्याख्या करने की हमारी प्रवृत्ति जो इस बात पर निर्भर करती है कि संदेश कैसे प्रस्तुत किया गया है

अवधारणा : एक अवधारणा पूरी कक्षा का प्रतिनिधित्व करती है; यह उन गुणों का समूह है जिन्हें हम एक विशेष वर्ग के साथ जोड़ते हैं

5.11 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

1) असत्य
2) सच
3) सच
4) सच
5) असत्य

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2

1) निर्णय लेना
2) समस्या
3) भाषाई सापेक्षता परिकल्पना या व्होर्फियन
4) मोरफ़ीमस
5) संज्ञानात्मक

5.12 संदर्भ और सुझाव पठन

- पिंकर, एस (2007) विचार की सामग्रीः मानव प्रकृति में एक खिड़की के रूप में भाषा पेंगुइन
- किवेटेलिडिस, जेबी (1981) चिंतन के विकास के पहलू किबरनेट्स, 10 (3), 201–204
- ग्रीन, ई, और एलिस, एल (2007) आपराधिक न्याय के लिए मनोविज्ञान लागू करने में डी कार्सन, बी मिल्ने, एफ पेक, के शलेव, और ए शायर (सं) चिस्टरः विले
- बर्नस्टीन, डीएम, एरफेल्डर, ई, मेल्ट्जॉफ, एएन, पेरिया, डब्ल्यू , और लॉफ्टस, जीआर (2011) 3 से 95 वर्ष की आयु तक हिंड्स पूर्वाग्रह प्रायोगिक मनोविज्ञान जर्नलः लर्निंग, मेमोरी और अनुभूति, 37 (2), 378
- त्वमेम, छश्र, और वोह, केडी (2012) पश्च दृष्टि पूर्वाग्रह मनोवैज्ञानिक विज्ञान पर परिप्रेक्ष्य, 7 (5), 411–426
- गालोटी, केएम (2017) प्रयोगशाला में और बाहर संज्ञानात्मक मनोविज्ञान 5वें संस्करण ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली, भारत
- स्टर्नबर्ग, आरजे और स्टर्नबर्ग, के (2012) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान 6 वें संस्करण वड्सवर्थ सेंगेज लर्निंग, यूनाइटेड स्टेट्स
- गालोटी, केएम (1999) "प्रमुख" वास्तविक जीवन का निर्णय लेनाः कॉलेज के छात्रों को एक अकादमिक प्रमुख चुनना जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 91 (2), 379
- मिंडा, जेपी (2015) चिंतन का मनोविज्ञानः तर्क, निर्णय लेने और समस्या को हल करना ऋषि प्रकाशन
- लुडेन, डी (2015) भाषा का मनोविज्ञानः एक एकीकृत दृष्टिकोण ऋषि प्रकाशन
- कहमन, डी (2011) सोच, तेज और धीमी मैकमिलन
- लूनबर्ग, एफसी (2010, सितंबर) निर्णय लेने की प्रक्रिया में शैक्षिक प्रशासन और पर्यवेक्षण जर्नल के राष्ट्रीय मंच, 27, 4

छवियों के लिए संदर्भ

एक दुर्लभ पोस्टर टाइटैनिक का विज्ञापन 19 मई, 2018 को https%@@wonderopolis-org@wonder@how&did&the&unsinkable&titanic&sink से लिया गया

रचनात्मकता के चरण मई 19, 2018 से पुनः प्राप्त http%@@www-docente-unicas-it@useruploads@000430@files@sawyer&r-k-&eÛplaning&creativity&2006-pdf

होपी जनजाति की लड़कियां 19 मई, 2018 को https://in-pinterest-com/pin/179018153917858736/ से लिया गया

नौ–डॉट समस्या का समाधान 19 मई, 2018 को http://www-swimano-com/vi/nghi&ra&ngoai&cai&hop&den&tu&dau/ से लिया गया

नौ–डॉट समस्या का समाधान (खंड 5.5.1 में पूछा गया)

जैसा कि आप देख सकते हैं, इस समस्या को दो तरीकों का पालन करके हल किया जा सकता है